चैतन्य का अध्ययन - विज्ञान के साथ

// सम्बोधन //

मानवीय शिक्षा प्रारूप में वर्तमान में दी जाने वाली शिक्षा के सार तत्वों के साथ जीवन संबंधी तत्वों के समावेश के लिये सुझाव दिया गया है, उसमें से सर्वप्रथम-

" विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष के अध्ययन को अनिवार्य रूप में प्रावधानित करने की बात कही गई है । "

1. आधार-

§1§ सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति,

§2§ प्रकृति में विकास का क्रम और इसी के तारतम्य में गठन-पूर्णता, क्रिया-पूर्णता एवं आचरण-पूर्णता ।

2. अनिवार्यता-

§1§ मनुष्य जड़-चैतन्य का संयुक्त प्रकाशन है ।

§2§ मनुष्य का रासायनिक एवं भौतिक सीमाओं में विश्लेषित न होना ।

§3§ मनुष्य ही रासायनिक एवं भौतिक सीमाओं का विश्लेषक है ।

§4§ वास्तविकता यथार्थता उपयोगिता व प्रयोजनीयता के अध्ययन के लिये मनुष्य विवश है ।

§5§ मनुष्य संज्ञान एवं संवेदनशील है ।

§6§ मनुष्य अभ्य व सह-अस्तित्वशील है ।

3. प्रयोजन-

§1§ मनुष्य के स्वरूप की स्थिति को जानना,

§2§ स्व-महत्ता को जानना,

§3§ स्वयं की गुणात्मकता की संभावनाओं का स्पष्टतया अवगाहन करना फलतः दायित्व और कर्तव्य का निर्वाह होना एवं सामाजिक सिद्ध होना ।

मनुष्य किसी न किसी अंश में भौतिक एवं रासायनिक क्रियाओं को नियंत्रित, परिमार्जित करता है । इसी साक्ष्य से उसका रासायनिक एवं भौतिक सीमा से अधिक होने का तथ्य स्पष्ट हो जाता है । गुरू मूल्य में लघु मूल्य समाया हुआ है। परिमाणक से ही परिमितियां, परिमार्जित होती हैं । मनुष्य के द्वारा जितने अंश में प्रकृति परिमार्जित हुई है उससे भी अधिक परिमार्जित करने की संभावना मनुष्य में है । ये सब स्वयं इस बात के द्योतक हैं कि मनुष्य भौतिक एवं रासायनिक क्रिया से अधिक विशाल शक्ति-सम्पन्न है ।

यह अधिक विशालता विकास के क्रम में प्रकाशित है । जो है जितना है, जैसा है, मनुष्य "में, से, के लिये" अध्यवसायी तत्व है । जो स्वयं में अस्तित्व है । इस पृथ्वी पर सृष्टि की वैविध्यता चार अवस्थाओं में प्रष्टव्य है-

अध्ययन_c (1985-1995)

www.madhyasth.orgए नागराज, प्रणेता एवं लेखक

अध्ययन_c (1985-1995)

www.madhyasth.orgए नागराज, प्रणेता एवं लेखक

[illegible]

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.	10.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

_c (1985-1995)
.madhyasth.org
ए नागराज, प्रणेता एवं